RNI MAHMAR
36829-2010

ISSN - 2229-4929

Peer Reviewed

Akshar Wangmay

International Research Journal

UGC-CARE LISTED

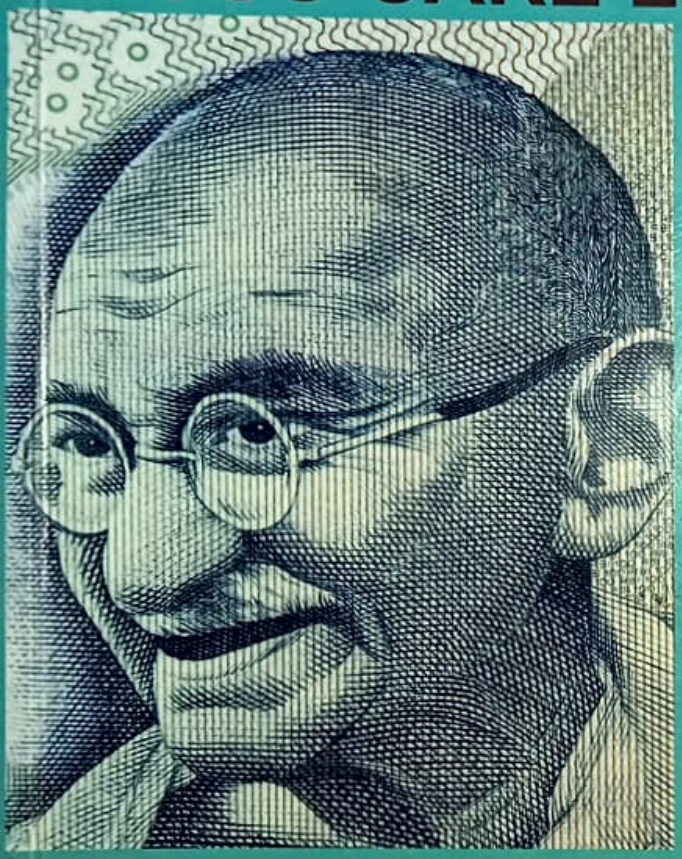

RETHINKING MAHATMA GANDHI IN PRESENT CONTEXT

February 2020

Executive Editor : Dr. Kiran Save

Co-Editor : Dr. Tanaji Pol
Prof. Anagha Padhye Deshmukh

Chief Editor : Dr. Nanasaheb Suryawanshi

१५	महात्मा गांधीजीची आदर्श ग्रामाची संकल्पना	डॉ. प्रमोद रामेश्वर चव्हाण	६७.६९
१६	गांधीवादाचा मराठी साहित्यावरील प्रभाव	डॉ. नाना झगडे,	७०.८१
१७	'सद्य परिस्थितीत महात्मा गांधींच्या आर्थिक विचारांची उपयुक्तता'	प्रा. डॉ. वसंत आबासाहेब खरात,	८२.८७
१८	महात्मा गांधीजींच्या स्वराज्य संकल्पनेचे एक साधन–सहकार मार्गदर्शक	डॉ. अनिल पाटील योगिनी जयवंत पाटील	८८.९३
१९	''सिनेमा आणि गांधी''	शशिकांत एस माघाडे	९४.९९
२०	सिनेमातील गांधी	प्रा. सुजाता बळवंत शिरोडे	१००.१०४
२१	'मराठी साहित्यातील गांधीवाद'	प्रा. यादव धोंडूजी मोरे	१०५.१०९
२२	महात्मा गांधीजींची सत्याग्रह संकल्पना	प्रा. वितेश भारत निकते	११०.११२
२३	महात्मा गांधीजींचे ग्रामीण विकासासंबंधीचे विचार	प्रा. डॉ. जे. के. पाटील	११३.११९
२४	''गांधीजीके ट्रस्टीशिप सिद्धांत का अन्वयार्थ''	श्री. अमन बगाडे	१२०.१२४
२५	महात्मा गांधीजीकी स्वदेशी विचारधारा	प्रा. दिप्ती हरेश म्हात्रे	१२५.१२७
२६	२१वीं सदी में गांधीवाद की उपयोगिता	डॉ. संगीता ठाकुर	१२८.१३१
२७	महात्मा गांधी – राष्ट्रीय नेता	प्रा. डॉ. शेडगे विजय सोपानराव	१३२.१३७
२८	ग्रामगीता व गांधीविचार	डॉ. शर्मिला वीरकर	१३८.१४५
२९	महात्मा गांधी यांचे अस्पृश्यताविषयक विचार	डॉ. सखाराम डाखोरे	१४६.१५२
३०	महात्मा गांधी आणि धर्म	डॉ. विन्सेन्ट कैतान डिमेलो	१५३.१६२

Akshar Wangmay(International Research Journal)
UGC CARE Journal
ISSN: 2229-4929 RNI MAHMAR 36829-2010
National Conference on Rethinking Mahatma Gandhi in Present Context
Organized by: Sonopant Dandekar Arts, V. S. Apte Commerce & M. H. Mehta Science College Palghar, Maharashtra, India
Held on 29th February 2020

२१वीं सदी में गांधीवाद की उपयोगिता

डॉ. संगीता ठाकुर
अध्यक्ष–हिन्दी विभाग
सोनोपंत दांडेकर महाविद्यालय,
पालघर – ४०१४०४

प्रस्तावना :

''यदा यदा हि धर्मस्थ ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानम अधर्मस्थ, तदात्मानं सृजाम्हम।।

गीता का उपर्युक्त 'लोक यह बताता है कि भारत में जब–जब धर्म की हानि हुई है, तब–तब इसका अभ्युत्थान करने के लिये भगवान (महापुरूष) इस देश में जन्म लेते है। परतंत्रता के जंजीरो से जकड़ी भारतीय जनता कराह रही थी, अनेक प्रकार की यातनाँ, और कष्ट भुगत रही थी तथा सामाजिक और आर्थिक जीवन अत्यंत ही अस्त–व्यस्त था। अशिक्षा का धोर अंधकार पूरे देश पर छाया हुआ था। अग्रेजो द्वारा देश के आर्थिक और प्राकृतिक साधनो का बुरी तरह शोषण किया जा रहा था। इंसानियत और मानवता चीत्कार कर रही थी। भारतमाता अग्रेजो की गुलामी की जंजीरो से जकड़ी हुई थी। देश की ऐसी कठिन परिस्थिती में काठियाँवाड़ के पोरबंदर (सुदामापुरी) नामक नगर में युगप्रवर्तक मोहनदास करमचंद गांधी का जन्म हुआ, जो बाद में ''गांधीजी'' ''महात्मा गांधी'' और ''बापू'' के नाम से विश्व में जाने गये।

गांधीवादी विचारधारा :

महात्मा गांधी ने न केवल भारत के राजनीतिक क्षेत्र में कार्य किया, अपितु विश्व में क्रांतिकारी चिंतन मौलिक देन थी। महात्मा गांधी कोरे दार्शनिक ही नहीं थे, अपितु धार्मिक भावना से अनुप्राणित होकर जनकल्याण के लिये अनवरत कार्य करने वाले कर्मयोगी थे। उन्होने प्लेटो, अरस्तू या मार्क्स की भाँति क्रमवध्द था, व्यवस्थित रूप से अपने सिध्दांतो की विवेचना नहीं की है, बल्कि अपने सामने आनेवाली समस्याओ के समाधान के लिये ही तत्कालीन परिस्थिति के अनुसार चिंतन किया, अपने विचार प्रकट किये और लेख लिखे इसलिये विभिन्न अवसरो में व्यक्त किये गये उनके विचारों में कुछ विरोध या असंगतियॉ भी मिलती है।

गांधीजी का एक निश्चित जीवन दर्शन था। राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय जटिलताओ के समाधान के लिये उनके कुछ विशेष सिध्दांत एवं उनकी पध्दती थी। उनके इन सिध्दांतो और उनकी कार्यपध्दती को सामूहिक रूप से 'गांधीवाद' के नाम से पुकारा जा सकता है। गांधीवाद की परिभाषा का प्रयत्न करते हुए डॉ. पी. स. रमैया लिखते है. ''गांधीवाद नीतिया, सिध्दांतो, नियमो, आदेशो आदि का सिध्दांत ही नहीं वरना जीवन का एक रास्ता है। इसके द्वारा जीवन की समस्याओं के प्रति एक नवीन दृष्टीकोण का प्रतिपादन या पुरातन दृष्टिकोण की पुर्नव्याख्या करते हुए आधुनिक समस्याओं के लिये पुरातन हल प्रस्तुत किये गये है।'' गांधीजी के विचारों को 'गांधी मार्ग' कहा जा सकता है। गांधीजी ने इतिहास में पहली बार सत्य, अंहिसा और प्रेम के आध्यात्मिक सिध्दांतो का राजनीति के क्षेत्र में इतने विशाल पैमाने पर प्रयोग किया और उसमे सफलता प्राप्त की।

विश्व मानवता को गांधीजी की देन :

वर्तमान युग आधुनिकता की चकाचौध से भरा–पुरा है, संपूर्ण जीवन पध्दति आर्थिकता के आधार पर सृजित हो रही है। बुध्दि का प्राबल्य है, विज्ञान की चकाचौध है, भौतिकता का बोलबाला है। वैश्विक दुनिया में, भूमंडलीकरण, उदारीकरण आदि कितनी ही उपजीव्य विचारधारा, हमारे समक्ष है, परंतु हम अनास्था, कुण्ठा और तनाव के शिकार बनते चले जा रहे है।

ऐसे विपरीत वातावरण में हमें जीवन जीने की राह सुझाती है। ''गाँधी चिन्तनधारा आज भले ही गांधीजी के व्यक्तिगत जीवन को लेकर या उनकी विचारधारा के परिप्रेक्ष्य में विरोध के ऊँचे स्वर उभर आये हो, परंतु विरोध के बीच उनका आदर्श रूप, मूल्यवादी दृष्टि, नैतिक जीवन और व्यक्तित्व युग–संदर्भ में प्रांसगिक और आवश्यक ही नहीं, बल्कि अनिवार्य अंग बन गया है। गांधीजी के संदर्भ में यदि ध्यानपूर्वक विश्लेषण किया जाये तो आधारभूत रूप से एक महत्वपूर्ण तथ्य दृष्टिगोचर होता है कि वे मूल रूप से मानवतावादी ही थे। इसी मानवतावादी चिंतन की भूमि पर उन्होंने अपने नैतिक दर्शन का निर्माण किया था। उनके नैतिक दर्शन के प्रमुख आधार आस्तिकता, त्याग, सहिष्णुता, सेवा, नैतिकता, कर्तव्य आत्मदर्शन, तप, समत्व, सत्य, अंहिसा, प्रेम और पारदर्शिता थे। उनके जीवन की सबसे महत्त्वपूर्ण विशेषता यह कही जा सकती है कि वे सैध्दांतिक रूप से कभी दार्शनिक नहीं थे या उन्होंने कभी सिध्दांतो की पहले–पहले सृजना नही की उनकी अर्न्तरात्मा ने किसी भी परिस्थिती में जैसा भी सत्याभास पाया, वही व्यवहारिक रूप में जीवन में लागू करते गये। वर्तमान में हमे इसी कथनी और करनी के अंतर को पहचानकर चलना होगा।

उनके जीवन के आधार रूप में सत्य और अहिंसा पूर्ण आस्था के साथ विद्यमान है। वे सत्य को इश्वर का पर्याय मानते थे और उसकी सिध्दि के लिये वे एक मात्र उपाय अहिंसा को ही स्वीकार

करते थे। उनके आशय से अंहिसा का स्वरूप ऐसा व्यवहार, जिसमें हिंसा का सहारा न लिया जाये मन, वचन, कर्म आदि सभी पर लागू होना चाहिए। गांधीजी के अनुयायी एवम् अमेरिकी अश्वेत नेता मर्टिन लूथर किंग के शब्दों में ''आज के अत्यंत विनाशकारी अस्त्रों के युग में हमारे सामने दो ही रास्ते है। या तो हम अंहिसा को अपना ले या फिर अपने अस्तित्व को ही मिट जाने दे।''

वास्तव में गांधीजी नैतिक मूल्यो के प्रबल समर्थक थे। उनके मानवतावाद की व्याप्ति मनुष्य से लेकर प्रकृति और जीवधारियों तक है। मित्र हो या कष्टदाता, गोरा हो या काला, स्त्री हो या पुरुष, बालक हो या वृध्द, देशी हो या विदेशी, वह किसी भी रंग या जाति–समुदाय का हो, वे सबके लिये अपना हृदय खोलकर रख देते थे। वे तुलसीदास के भक्ति–भाव और समर्पण के कायल थे इसलिये गोस्वामी तुलसीदास की पक्तियाँ .....

''सीय राम मय सब जग जानी
करऊ प्रनाम जोरि जुग पानी।''

की भावभूमि उनके मानवतावादी रूप के दर्शन होते है। गांधीजी का कथन और उनका जीवनभर का व्यवहार इस बात का साक्षी है कि वे एकांत और अकेले ही मुक्ति के आकांक्षी नहीं थे। वे मनुष्य में देवत्व के अन्वेषक थे।

स्वामी विवेकानंद ने अपनी प्रसिध्द शिकागो सम्मेलन में जिस '',कोहं बहुस्याम'' का शंखनाद किया और बाद में उसे व्यवहार के स्तर पर प्रतिष्ठापित किया, वह राजमार्ग विश्वमानवतावाद की ओर ही जाता है, जो गांधीजी की कर्म चेतना में पग–पग पर साकार हुआ है सारांश कथन यह है कि मानवतावाद आधुनिक बौध्दिक समाज की कोई नव्यतर उपार्जित संज्ञा नहीं है, वरन इस कल्पवृक्ष की जड़े ''उदार चरितानां तु वसुधैव कुटूम्बकम।'' में मौजूद थी। जीवन के समस्त क्षेत्रों में चाहे वह सामाजिक हो आध्यात्मिक हो राजनैतिक हो या दार्शनिक हो जितना गांधीजी के विचार प्रस्तुत हु, है उतना शायद ही किसी अन्य विचारक के हों। उनके विचार किसी समाज विशेष या राष्ट्र के लिये न होकर संपूर्ण मानव जाति के कल्याण के लिये है। वास्तव में युध्द और संघर्ष की विभिषिका से त्रस्त विश्व राजनीति में उन्नति और विकास का मार्ग कही खोजा जा सकता है, तो वह है गांधी–विचारधारा।

सारांश :

आज के युग में गांधीवाद का महत्त्व तो और भी अधिक बढ़ गया है। क्योंकि संसार में अत्याचार का सामना करने के दो ही उपाय है। हिंसक और अहिंसक। अहिंसक सभ्य उपाय है और वह व्यवहारिक भी है। इसीलिये तो प्रसिध्द फ्रांसीसी लेखक रामा–रोला ने कहा था। ''बिना हिंसा के

मानवता में सत्प्रयत्न के लिये सत्याग्रह ही अब एकमात्र उपाय रह गया है। यदि यह विफल हो गया तो संसार से हिंसा के अतिरिक्त और कुछ भी नहीं बचेगा।''

आधुनिक विश्व के सबसे महान वैज्ञानिक आइंस्टान के कमरे में जो तस्वीरे टंगी रहती थी, उनमें से एक गांधीजी की थी। इससे स्पष्ट है गांधीजी को संपूर्ण विश्व के बुध्दिजीवी संसार में कितना आदर प्राप्त था। यह आदर उनके विचारो का था।

संदर्भ सूचि :

१. आधुनिक भारतीय चिंतन – विश्वनाथ
२. महात्मा गांधी जीवन एवम् दर्शन – नाटाणी प्रकाश नारायण – पुनीते प्रकाशन, जयपुर
३. महान समाजशास्त्रीय विचारक – बघेल डी. स.
४. सत्य के साथ मेरे प्रयोग – महात्मा गांधी
५. गांधीअन कॉन्सेप्ट ऑफ स्टेट – मजूमदार
६. आत्मकथा – महात्मा गांधी
७. गांधी चरित्र रेखा – दा. न. शिखरे
८. गांधी एक अध्ययन – सक्सेना रमेश – विश्वभारती पब्लिकेशन, नई दिल्ली
९. गांधी विचार मीमांसा – भारदे, बालासाहेब महात्मा गांधी स्मारक निधि प्रकाशन पुणे १९९३.
१०.महात्मा गांधी धर्म, पंथ एवं राजनीति – डॉ. आदर्श कुमार माथुर